विचार बिन्दु

नम्रता और खुदा के खौफ से इज्जत और जिन्दगी मिलती है। –सुलेमान

मोदी ने देश का मस्तिष्क ऊंचा किया : भारत ने पाक को धूल चटाई

देशभर में नागरिकों ने पाकिस्तान पर भारतीय सेना की कार्रवाई का जोरदार स्वागत किया है। राजनीतिक, सामाजिक सहित समाज के सभी वर्गों के लोगों ने भारत माता की जय और जयहिन्द के जयकारे के साथ सेना के जज्बे को सलाम किया गया। कई स्थानों पर विभिन्न समुदाय के लोगों ने एक-दूसरे को मिठाई बांटकर अपनी खुशी का इजहार किया। भारत ने पाकिस्तान पर अब तक का सबसे बड़ा और तगड़ा प्रहार करते हुए ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च कर पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला पाकिस्तान से ले लिया है। भारत ने एक पखवाड़े के अंदर जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों की धर्म पूछ कर की गई हत्या का बदला लेते हुए भारत के वीर सपूतों ने पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों को मिट्टी में मिला दिया। इस कायराना हमले में आतंकियों ने सिर्फ पुरुषों को निशाना बनाया था और महिलाओं को ये कहकर छोड़ दिया था कि जाओ जाकर मोदी को बता देना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने एक एक शब्दों पर कायम रहे और जो कहा उसे पूरा करके दुनिया को दिखा दिया। मोदी का जवाब पाकिस्तान में हाहाकार बनकर गूंज रहा है। भारतीय सेना के पराक्रम और ऑपरेशन सिंदूर की चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है। मिसाइल स्ट्राइक के बाद भारत ने साफ संदेश दे दिया है हमले का जवाब मुंहतोड़ मिलेगा। आतंकियों को किसी भी हालत में छोड़ा नहीं जायेगा। गृह मंत्री अमित शाह ने पहले ही घोषणा कर दी थी हत्यारों और आतंकियों को चुन-चुन कर मारा जायेगा। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष के उन लोगों को भी करारा जवाब दे दिया जो सरकार की नियत पर सवाल उठा रहे थे। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने इस बीच कहा कि हमने उन्हीं को मारा जिन्होंने आतंक फैलाया। उन्होंने कहा हमारे प्रधान मंत्री मोदी ने पाक को सबक सिखाकर देश का मष्तिस्क ऊँचा किया है।

बताया जाता है इस मिसाइल स्ट्राइक में सौ से अधिक आतंकी मारे गए। भारत ने पाकिस्तान के सैनिक अथवा नागरिक ठिकानों पर कोई हमला नहीं किया। भारत की इस कार्यवाही से पूरे देश में हर्ष की लहर दौड़ गई। लोगों ने जगह जगह अपनी ख़ुशी का इजहार किया। लोगों ऑपरेशन सिन्दूर को सलाम किया है। हर कोई प्रधानमंत्री मोदी और भारतीय सेना की तारीफ कर रहा है। इस घटना के बाद सबके जुबान पर इसके बदले की बात आ गई। सभी आतंकियों से बदले की बात कर रहे थे। मीडिया और सोशल मीडिया से सरकार पर दबाव बन रहा था। हर नागरिक, सिविल सोसाइटी और विपक्ष सरकार को आतंकवादियों और उसके आका पाकिस्तान से बदला लेने के लिए कह रहा था। इस नृशंष हमले के बाद से समूचा देश गुस्से से उबल रहा था और पाकिस्तान के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहा था। आखिरकार पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारतीय आर्मी ने 6 मई की आधी रात को पीओके और पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूत कर दिया है।

सेना की इस कार्यवाही को ऑपरेशन सिंदूर बताया गया है। भारतीय सेना की प्रवक्ता, कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने पाकिस्तान के खिलाफ 25 मिनट तक चले ऑपरेशन सिंदूर के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। देश के इतिहास में पहली बार आर्म्ड फोर्स की दो महिलाएं प्रेस ब्रीफिंग करने आईं। इनमें से एक एयरफोर्स से और दूसरी सेना से हैं। भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री के साथ ये दोनों अधिकारी भी मीडिया से मुखातिब हुईं और ऑपरेशन सिंदूर की सम्पूर्ण जानकारी मीडिया से साझा की। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया, जिससे लगभग 100 आतंकवादी मारे गए। कर्नल सोफिया कुरैशी ने बताया 7 मई की रात को 1.05 बजे भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान और में घुसकर ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया और ये ऑपरेशन करीब 25 मिनट तक चला, उन्होंने बताया कि कैसे भारतीय वायु सेना ने सिलसिलेवार तरीके से पाकिस्तान में मौजूद आतंकी कैम्पों को तबाह किया। ये सभी वो ठिकाने थे जहां से भारत के खिलाफ कई आतंकी हमलों की साजिश रची गई थी और भविष्य में हमलों की योजना बनाई जा रही थी। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि वीडियो में तबाह किए गए आतंकी शिविरों को दिखाया गया है, जिसमें मुरीदके भी शामिल है, जहां 2008 के मुंबई आतंकी हमलों में शामिल अजमल कसाब और डेविड हेडली ने ट्रेनिंग ली थी। पाक मीडिया के सूत्रों के मुताबिक पाकिस्तान में डर का माहौल हैं और सरकार की ओर से नागरिकों के लिए कई निर्देश जारी किए गए हैं। वहीं पाकिस्तान के संचार मंत्री तरार ने इस हमले का जवाब देने की धमकी दी है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत की गई इस कार्रवाई में मोस्ट वॉन्टेड आतंकी मसूद अजहर के परिवार के 14 लोग भी मारे गए हैं। आतंकी मसूद अजहर ने चिट्ठी जारी करते हुए कहा कि दिल करता है कि काश मैं भी इस हमले में मर जाता। पाकिस्तान ने भारत की ओर स्ट्राइक किए जाने की बात स्वीकार कर ली है।

भारत ने पाकिस्तान पर अब तक का सबसे बड़ा और तगड़ा प्रहार करते हुए ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च कर पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला पाकिस्तान से ले लिया है। भारत ने एक पखवाड़े के अंदर जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों की धर्म पूछ कर की गई हत्या का बदला लेते हुए भारत के वीर सपूतों ने पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों को मिट्टी में मिला दिया।

भारत की तरफ से पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में किए गए ऑपरेशन सिंदूर को जहां एक तरफ भारतीय शेयर बाजार ने सलाम किया और रेड जोन में खुलकर बढ़त बनाई। दूसरी तरफ पाकिस्तान के स्टॉक मार्केट में भारी कोहराम है और निवेशक सहम हुए हैं। बुधवार को पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर हमले के बाद खुले पाकिस्तान के बेंचमार्क शेयर इंडेक्स में 5.78 प्रतिशत की भारी गिरावट दिखी. केएसई-100 इंडेक्स शुरुआती कारोबार में 6,272 अंक यानी 5.5 प्रतिशत फिसलकर 107,296 पर कारोबार कर रहा है। इसके अलावा पूरे पाक में भारत की इस कार्यवाही से डर का माहौल है। यह 6 मई रात्रि की एयर स्ट्राइक 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 के बालाकोटएयर स्ट्राइक से ज्यादा प्रभावी बताई गई है। मोदी सरकार के खिलाफ तंज़ कसने वाले विपक्षी नेताओं की भी बोलती बंद हो गई है। खुद पाकिस्तान की तरफ से ऑपरेशन सिंदूर के सबूत पेश किये जाने लगे तो भारत के विपक्षी नेता जो मोदी के खिलाफ बोल रहे थे, अब सेना की कार्यवाही को सलाम करने लगे है।

बालमुकुंद ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 8 मई, 2025

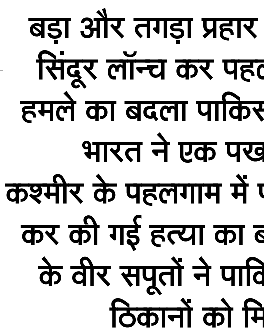

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र सायं 9:06 तक, हर्षण योग रात्रि 1:57 तक, विष्टिकरण दिन 12:30 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज भद्रा दिन 12:30 तक है। आज मोहिनी एकादशी व्रत, लक्ष्मी नारायण एकादशी और परशुराम द्वादशी, रुक्मणी द्वादशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:26 तक, चर 10:44 से 12:23 तक, लाभ अमृत 12:23 से 3:41 तक, शुभ 5:20 से सूर्यास्त तक।
राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 6:59

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

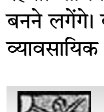

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

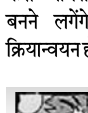

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

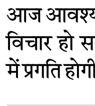

वृष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

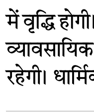

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

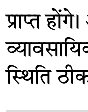

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

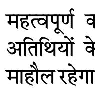

मिथुन

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

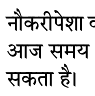

तुला

व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

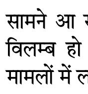

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

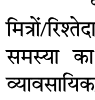

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

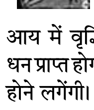

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी।

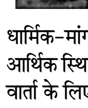

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

थैलेसीमिया

अशोक कुमार

हर साल 8 मई को थैलेसीमिया दिवस, जिसे अंतर्राष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस के रूप में भी जाना जाता है, मनाया जाता है। 2025 में भी यह गुरुवार, 8 मई को मनाया जाएगा। थैलेसीमिया एक आनुवंशिक रक्त विकार है जिसमें शरीर पर्याप्त मात्रा में हीमोग्लोबिन का उत्पादन नहीं कर पाता है। हीमोग्लोबिन लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाने वाला प्रोटीन है जो पूरे शरीर में ऑक्सीजन पहुंचाता है। थैलेसीमिया से पीड़ित लोगों में एनीमिया (लाल रक्त कोशिकाओं या हीमोग्लोबिन का निम्न स्तर) हो सकता है, जिससे थकान, कमजोरी, पीली त्वचा और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। गंभीर मामलों में, नियमित रक्त आधान की आवश्यकता हो सकती है।

यह दिन थैलेसीमिया रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने, इस बीमारी से पीड़ित लोगों को श्रद्धांजलि देने और उनके जीवन को बेहतर बनाने के तरीकों पर विचार करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन थैलेसीमिया इंटरनेशनल फेडरेशन (TIF) द्वारा स्थापित किया गया था और पहली बार 1994 में मनाया गया था। यह TIF के अध्यक्ष और संस्थापक पैनोस एंग्लेजोस के बेटे जॉर्ज एंग्लेजोस की याद में स्थापित किया गया था, जिनकी थैलेसीमिया के कारण मृत्यु हो गई थी।

2025 के लिए अंतर्राष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस का विषय है: "टुगेदर फॉर थैलेसीमिया: यूनाइटिंग कम्युनिटीज, प्रायोरिटाइजिंग पेशेंट्स" इस विषय का मुख्य उद्देश्य रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर देना है, जिसमें न केवल चिकित्सा बल्कि थैलेसीमिया से पीड़ित व्यक्तियों की भावनात्मक और सामाजिक जरूरतों को भी संबोधित किया जाए।

भारत में थैलेसीमिया एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या है, और हर साल बड़ी संख्या में बच्चे इस बीमारी के साथ पैदा होते हैं। थैलेसीमिया वाहक भी बड़ी संख्या में हैं। इसलिए, इस बीमारी के बारे में जागरूकता बढ़ाना और रोकथाम के उपायों को बढ़ावा देना बहुत महत्वपूर्ण है।

थैलेसीमिया के प्रकार: अल्फा थैलेसीमिया: यह थैलेसीमिया का एक प्रकार है जो अल्फा-ग्लोबिन प्रोटीन के उत्पादन को प्रभावित करता है।

बीटा थैलेसीमिया: यह थैलेसीमिया का एक प्रकार है जो बीटा-ग्लोबिन प्रोटीन के उत्पादन को प्रभावित करता है।

थैलेसीमिया के लक्षण: थकान और कमजोरी, त्वचा में पीलापन, हड्डी के दर्द, विकास में देरी, अस्थि मज्जा का विस्तार।

थैलेसीमिया के कारण: वंशानुगत जीन में उत्परिवर्तन. अल्फा या बीटा ग्लोबिन प्रोटीन के उत्पादन में कमी।

थैलेसीमिया का निदान:-

खून की जांच, आनुवंशिक परीक्षण

थैलेसीमिया का उपचार: रक्त चढ़ाना: गंभीर थैलेसीमिया में नियमित रक्त चढ़ाना आवश्यक हो सकता है. चेलेशन थेरेपी:

रक्त आधान के कारण आयरन जमा हो जाता है, जिसे निकालने के लिए चेलेशन थेरेपी की आवश्यकता हो सकती है. अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण: कुछ मामलों में, अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण एक विकल्प हो सकता है। हाइड्रोक्सीयूरिया: यह एक दवा है जो कुछ मामलों में हीमोग्लोबिन के उत्पादन में सुधार कर सकती है।

थैलेसीमिया से बचाव:-

आनुवंशिक परामर्श, गर्भावस्था के दौरान रक्त की जांच।

थैलेसीमिया से प्रभावित व्यक्ति के लिए, उचित देखभाल और प्रबंधन महत्वपूर्ण है। यदि आपको या आपके परिवार के किसी सदस्य को थैलेसीमिया के लक्षण दिखाई देते हैं, भारत में थैलेसीमिया के विभिन्न राज्यों में प्रतिशतता अलग-अलग है। देश में थैलेसीमिया वाहकों की औसत आवृत्ति 3-4% है, लेकिन कुछ समुदायों और क्षेत्रों में यह बहुत अधिक है। राज्यों में थैलेसीमिया की अनुमानित प्रतिशतता है: पंजाब: 6.5%, तमिलनाडु: 8.4%, दक्षिण भारत (औसत): 4.3%, बंगाल: 3.5%, गुजरात: 10-15%, राजस्थान (सिरोही क्षेत्र): 7.25%, उत्तर प्रदेश (कुछ क्षेत्रों में): 12.98% तक, दिल्ली: 5.47%, हिमाचल प्रदेश (छात्रों में): 2.57%, उत्तराखंड (गढ़वाल): 1.5% कुछ समुदायों, जैसे सिंधी, लुवाना, आदिवासी और राजपूतों में थैलेसीमिया की उच्च व्यापकता देखी गई है। भारत में लगभग 1 से 1.5 लाख थैलेसीमिया मेजर के बच्चे हैं और लगभग 42 मिलियन बीटा-थैलेसीमिया वाहक हैं। हर साल लगभग 10,000-15,000 बच्चे थैलेसीमिया मेजर के साथ पैदा होते हैं। इस प्रकार, भारत में थैलेसीमिया एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या है।

राजस्थान में थैलेसीमिया की प्रतिशतता विभिन्न स्थानों और समुदायों में अलग-अलग है। राज्य के कुछ क्षेत्रों में, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों में, इसकी व्यापकता अधिक पाई गई है।

यहां कुछ विशिष्ट स्थानों और समुदायों में थैलेसीमिया की अनुमानित प्रतिशतता दी गई है: सिरोही क्षेत्र (आदिवासी): 7.25% बीटा-थैलेसीमिया वाहक, राजस्थान (सामान्य): लगभग 3.79% बीटा-थैलेसीमिया सिंड्रोम, आदिवासी समुदाय (राजस्थान): सामान्य जातियों (2.32%) और अनुसूचित जातियों (3.08%) की तुलना में उत्परिवर्ती जीन (Hb S, Hb D, Hb E) की उच्च घटना (6.85%) देखी गई है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा और सिरोही जिलों के नवजात शिशुओं में: अल्फा-थैलेसीमिया (Hb-Bart's) की समग्र घटना 1.88% थी, जो अनुसूचित जनजातियों में 3.07%, अनुसूचित जातियों में 1.43% और सामान्य जातियों में 0.77% थी। पश्चिमी राजस्थान: बीटा-थैलेसीमिया के मामले आम हैं। कोटा: एक अध्ययन में बीटा थैलेसीमिया वाहक दर सबसे अधिक (48.76%) पाई गई।

राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों में थैलेसीमिया और अन्य हीमोग्लोबिनोपैथी एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है। भारत में थैलेसीमिया का उपचार कई प्रतिष्ठित अस्पतालों में उपलब्ध है। कुछ प्रमुख केंद्र जहां थैलेसीमिया का उपचार होता है, वे इस प्रकार हैं :

दिल्ली: मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, इंद्रप्रस्थ अपोलो हॉस्पिटल, बीएलके-मैक्स हॉस्पिटल, फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट (गुड़गांव), आर्टेमिस हॉस्पिटल (गुड़गांव), मुंबई: कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल. चेन्नई: अपोलो हॉस्पिटल्स, ग्लेनीगल्स हेल्थसिटी, बैंगलोर: मणिपाल हॉस्पिटल, हैदराबाद: केअर हॉस्पिटल्स, थैलेसीमिया और सिकल सेल सोसाइटी, कोलकाता: अपोलो मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल्स। इस दिशा कई अन्य चिकित्सा केंद्र भी खुल रहे हैं।

राजस्थान में थैलेसीमिया के इलाज के लिए कई अस्पताल और केंद्र उपलब्ध हैं, खासकर जयपुर और अन्य बड़े शहरों में। यहाँ कुछ प्रमुख स्थान दिए गए हैं जहाँ थैलेसीमिया का इलाज होता है:

जयपुर: मणीपाल हॉस्पिटल: यह एक मल्टी-स्पेशियलिटी अस्पताल है जहाँ हेमेटोलॉजी विभाग में थैलेसीमिया का इलाज किया जाता है। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल: यह भी एक प्रमुख अस्पताल है जहाँ विभिन्न रक्त विकारों सहित थैलेसीमिया का इलाज उपलब्ध है। संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल हॉस्पिटल : यह भी जयपुर का एक प्रतिष्ठित अस्पताल है जहाँ थैलेसीमिया के रोगियों का इलाज किया जाता है। सवाई मानसिंह हॉस्पिटल (सरकारी): खबरों के अनुसार, यह अस्पताल स्टेम सेल थेरेपी के माध्यम से थैलेसीमिया के इलाज पर काम कर रहा है और यहाँ ब्लड ट्रांसफ्यूजन की सुविधा भी उपलब्ध है।

जयपुर हीमेटोलॉजी सेंटर: यह एक विशेष क्लिनिक हो सकता है जहाँ हेमेटोलॉजिस्ट थैलेसीमिया के रोगियों को परामर्श और उपचार प्रदान करते हैं। रेडक्लिफ लैब्स और अपोलो डायग्नोस्टिक्स: ये डायग्नोस्टिक सेंटर भी थैलेसीमिया से संबंधित परीक्षण और संभवत: कुछ उपचार सेवाएं प्रदान करते हैं। अन्य स्थान: अबू रोड: संकल्प इंडिया फाउंडेशन द्वारा समर्थित एक थैलेसीमिया डे केयर सेंटर आरएमएम ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रॉमा सेंटर में 1 अक्टूबर 2018 से चल रहा है। यह केंद्र व्यवस्थित रक्त आधान, आयरन चिलेशन थेरेपी और नियमित निगरानी जैसी सेवाएं प्रदान है।

कोटा: सरकारी सूत्रों के अनुसार, यहां भी थैलेसीमिया के इलाज की सुविधाएँ हो सकती हैं। जोधपुर: अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जोधपुर में भी हेमेटोलॉजी विभाग में थैलेसीमिया का इलाज संभव है। इस दिशा मे राजस्थान मे कई अन्य चिकित्सा केंद्र भी खुल रहे हैं।

साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट फॉर थैलेसीमिया, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी (जयपुर) और क्योर2चिल्ड्रन फाउंडेशन (इटली) को शामिल करने वाला एक संयुक्त उद्यम है। यह महात्मा गांधी अस्पताल हेमटोलॉजी टॉवर की 5वीं मंजिल पर स्थित है।

इसकी स्थापना 2012 में जयपुर में मानव सेवा संघ प्रेम निकेतन अस्पताल और क्योर2चिल्ड्रन फाउंडेशन के सहयोग से की गई थी। साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया मे अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण के माध्यम से गंभीर रक्त विकारों, विशेष रूप से ट्रांसफ्यूजन-निर्भर थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों के लिए उपचार और संभावित इलाज प्रदान करने के लिए समर्पित है। यह राजस्थान में यह निश्चित इलाज प्रदान करने वाला पहला केंद्र था। साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया का प्राथमिक उद्देश्य अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण की पेशकश करना है, जिससे थैलेसीमिया मेजर से पीड़ित बच्चों को सामान्य जीवन जीने का मौका मिल सके।

साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया में स्थानीय चिकित्सा दल ने 2012 से बच्चे के भाई बहिन से 100% HLA मिलान करने के बाद मज्जा प्रत्यारोपण शुरू किया है ।

अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण के अलावा, साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया थैलेसीमिया निदान, उपचार और देखभाल से संबंधित अन्य सेवाएँ भी प्रदान करता है। साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया में स्थानीय चिकित्सा दल ने 211 अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण (मिलान किए गए और आंशिक रूप से मिलान किए गए पारिवारिक दाताओं) किए हैं। साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया, जयपुर, राजस्थान में थैलेसीमिया के मरीजों के इलाज के लिए कई तरह से आर्थिक सहायता मिलती है:-

प्रत्येक प्रत्यारोपण की लागत न्यूनतम 1000000 रुपये है। राजस्थान सरकार ने शुरू में अधिकतम 7 लाख रोगियों के लिए प्रावधान किया था। शेष राशि संस्थान द्वारा दान से प्राप्त धन से वहन की गई। भारत में थैलेसीमिया मेजर के उपचार के लिए समर्पित एकमात्र केंद्र के रूप में खुद को गौरवान्वित करते हुए, साउथ ईस्ट एशिया इंस्टीट्यूट ऑफ थैलेसीमिया दुनिया के सभी कोनों से थैलेसीमिया मेजर के बच्चों को अत्याधुनिक उपचार प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। रोगियों पर कोई वित्तीय बोझ डाले बिना और फिर भी अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण देखभाल और परिणाम बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

नशे की लत में जकड़ता युवा वर्ग

अविनाश जोशी

आज के आधुनिक युग में जहाँ विज्ञान और तकनीक ने अपार प्रगति की है, वहीं मानव जीवन अनेक सामाजिक बुराइयों से भी घिरता जा रहा है। इन्हीं समस्याओं में से एक गंभीर समस्या है– नशे की लत। भारत जैसे युवा राष्ट्र में नशे का बढ़ता प्रभाव चिंताजनक है। यह न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति में भी बाधक बनता है। नशे की लत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जीवन पर व्यापक दुष्प्रभाव डालती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह अनेक रोगों जैसे कैंसर, हृदय विकार, लीवर रोग और मानसिक विकृतियों का कारण बनता है। मानसिक स्थिति कमजोर होने के कारण व्यक्ति अवसाद, चिंता और आत्महत्या जैसे खतरनाक कदम तक उठाने को मजबूर हो जाता है।

व्यक्तिगत स्तर पर नशा पारिवारिक कलह, आर्थिक संकट और सामाजिक बहिष्कार का कारण बनता है। कई बार नशे की आवश्यकता पूरी करने हेतु व्यक्ति अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है। सामाजिक स्तर पर नशे के कारण अपराध दर में वृद्धि, सड़क दुर्घटनाएँ और युवाओं में नैतिक पतन देखने को मिलता है।

नशे की समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। सबसे पहले शिक्षा के स्तर पर नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता फैलानी चाहिए। विद्यालयों और महाविद्यालयों में विशेष अभियानों और कार्यशालाओं के माध्यम से छात्रों को सही मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। सरकार को नशीले पदार्थों की तस्करी और बिक्री पर कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। दोषियों को सख्त सजा दी जानी चाहिए ताकि यह दूसरों के लिए भी चेतावनी बने। साथ ही, पुनर्वास केंद्रों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए ताकि जो लोग नशे के जाल में फँस चुके हैं, उन्हें पुनः सामान्य जीवन में लौटने का अवसर मिल सके।

नशे की लत से निजात पाने हेतु परिवार की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नशे से मुक्ति न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि राष्ट्र को भी सशक्त और प्रगतिशील बनाती है।

युवा किसी भी देश का भविष्य होते हैं। उनकी ऊर्जा, सपने और संघर्ष ही राष्ट्र को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाते हैं। परंतु जब यही युवा नशे की गिरफ्त में आ जाते हैं, तो न केवल उनका स्वयं का जीवन बर्बाद होता है, बल्कि देश की प्रगति भी बाधित होती है। आज आवश्यकता है कि युवा जागरूक बनें और नशे जैसी घातक प्रवृत्तियों से स्वयं को दूर रखें। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा, असफलता का भय, पारिवारिक तनाव, गलत संगति और खाली समय के कारण युवा वर्ग नशे की ओर आकर्षित हो रहा है। प्रारंभ में मनोरंजन या तनावमुक्ति के लिए किया गया नशा धीरे-धीरे आदत और फिर लत बन जाता है, जो जीवन को विनाश की ओर ले जाता है।

युवाओं को सबसे पहले अपने जीवन का उद्देश्य स्पष्ट करना चाहिए। जब लक्ष्य निर्धारित हो और उस पर केंद्रित रहा जाए, तो नकारात्मक आदतें स्वत: दूर हो जाती हैं। अच्छे मित्रों का चयन भी नशे से बचने में मदद करता है, क्योंकि गलत संगति बहुत जल्दी बुरी आदतों की ओर ले जाती है।

स्वस्थ जीवनशैली अपनाना अत्यंत आवश्यक है। योग, ध्यान, खेलकूद और रचनात्मक गतिविधियाँ न केवल शरीर को स्वस्थ रखती हैं, बल्कि मन को भी सकारात्मक बनाए रखती हैं। युवाओं को चाहिए कि किसी भी प्रकार की तनावपूर्ण स्थिति में नशे का सहारा लेने की बजाय परिवारजनों या मित्रों से खुलकर चर्चा करें। साथ ही, नशे के दुष्परिणामों की सही जानकारी रखना भी आवश्यक है। जब युवा जानेंगे कि नशा किस प्रकार शरीर, दिमाग और रिश्तों को नष्ट करता है, तो वे उससे दूर रहने के लिए अधिक प्रेरित होंगे। 'ना' कहने का साहस और दृढ़ निश्चय भी नशे से बचाव का महत्वपूर्ण साधन है। युवाओं को अपने खाली समय का सदुपयोग करना आना चाहिए। संगीत, नृत्य, लेखन, चित्रकला जैसी कलाओं में रुचि लेकर वे स्वयं को रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रख सकते हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक कार्यों में भागीदारी से सेवा का भाव जागृत होता है और जीवन में सकारात्मकता आती है। आज का युवा यदि अपने लक्ष्यों के प्रति ईमानदार रहे, सही दिशा में प्रयत्नशील रहे और बुरी आदतों से सावधान रहे, तो नशे जैसी सामाजिक बुराई को जड़ से समाप्त कर सकता है। नशे से दूर रहना केवल व्यक्तिगत रक्षा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में योगदान देना भी है। अत: प्रत्येक युवा को संकल्प लेना चाहिए– "स्वस्थ जीवन जिएँ, नशामुक्त भारत बनाएँ!"

आज के समय में नशे की लत युवाओं के बीच तेजी से बढ़ती जा रही है। युवावस्था ऊर्जा, उत्साह, और सपनों से भरी होती है, लेकिन जब यह उम्र नशे की गिरफ्त में आ जाती है, तो न केवल व्यक्तिगत जीवन प्रभावित होता है, बल्कि परिवार और समाज भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। युवाओं को यह समझना चाहिए कि उनका भविष्य उनके हाथ में है। नशा केवल क्षणिक आनंद देता है, लेकिन जीवनभर का दुख बन सकता है। स्वच्छ, सकारात्मक और लक्ष्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा ही नशे से मुक्ति का सबसे बड़ा उपाय है।

आज के समय में, जब भौतिकता और उपभोक्तावाद का बोलबाला है, प्रतिष्ठा और सम्मान की परिभाषाएँ भी बदलती जा रही हैं। विशेषकर अमीर युवाओं के बीच, नशा करना एक नया 'प्रतिष्ठा चिन्ह' बनता जा रहा है। शराब, सिगरेट, ड्रग्स या अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन उनके लिए सामाजिक रुतबे और आधुनिकता का प्रतीक बन गया है। यह प्रवृत्ति न केवल उनके स्वयं के जीवन को खतरे में डाल रही है, बल्कि पूरे समाज के मूल्यों को भी चोट पहुँचा रही है।

अमीर युवाओं के बीच यह धारणा बनती जा रही है कि महंगे क्लबों में शराब पीना, महंगी ड्रग्स का सेवन करना या फैशनेबल पार्टियों में नशे की हालत में दिखना एक उच्च सामाजिक स्तर की पहचान है। यह एक प्रकार की दिखावटी प्रतिष्ठा है, जो आंतरिक शक्ति या चरित्र नहीं, बल्कि बाहरी आडंबर पर आधारित है। सोशल मीडिया ने इस प्रवृत्ति को और बढ़ावा दिया है। इंस्टाग्राम, स्नैपचैट जैसी साइटों पर पार्टी करते हुए, शराब या हुक्का हाथ में लिए तस्वीरें डालना आज फैशन बन गया है। इससे अन्य युवा भी प्रेरित होते हैं और इस गलत धारणा को सही मानने लगते हैं।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

टिड्डियों को मारने के लिए 17 साल के इशान ने विशेष ड्रोन व एप बनाया

मुंबई के रहने वाले 11वीं में पढ़ने वाले इशान बीकानेर पहुंचे, टिड्डी नियंत्रण विभाग के अधिकारियों के समक्ष अपनी तकनीकी बताई

बीकानेर, (निसं)। रेगिस्तानी इलाकों में हलकी नमी और हलकी बारिश के बाद टिड्डियों का खतरा बढ़ने लगता है। अगर टिड्डियों का झुंड आ गया तो वो 25 दिन में अपनी संख्या हजार गुना तक फैला लेती है। आम आदमी कई बार पहचान भी नहीं पाता कि ये टिड्डी है या ग्रास हॉपर। मगर मुंबई के 17 साल के इशान ने एक ऐसा एप और ड्रोन बनाया है, जिससे ना सिर्फ टिड्डी की पहचान होगी, बल्कि उसे लाखों हैक्टेयर में एक साथ मारा जा सकता है।

11वीं में पढ़ने वाले इशान बीकानेर पहुंचे। टिड्डी नियंत्रण विभाग के अधिकारियों के समक्ष उन्होंने अपनी तकनीकी बताई। इशान ने दो ड्रोन तैयार किए हैं। पहला ड्रोन 5 लीटर कैमिकल लेकर पांच हैक्टेयर में कुछ मिनटों में टिड्डी मार देगा। दूसरा तरीका ये है कि एक साथ 100 ड्रोन एक ही जगह से उड़ान भरेंगे। सबके पास 5 से 10 लीटर तक कैमिकल होगा और वे बिना टकराव के अपनी-अपनी सीमा में लाखों हैक्टेयर में फैली टिड्डियों को मार सकते हैं।

■ ये ड्रोन खुद इशान ने तैयार किया, जो सिर्फ 70 हजार रुपए में बनकर तैयार हो सकता है

अच्छी बात ये है कि टिड्डियों को मारने के लिए कैमिकल की जगह नीम ऑयल का उपयोग किया जाएगा। नीम ऑयल से टिड्डी का नर्वस सिस्टम फेल हो जाता है। वो ना कुछ खा पाती है, ना उड़ पाती है। कुछ ही समय पहले इशान ने अंतरराष्ट्रीय रोबोटिक प्रदर्शन में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। ये ड्रोन खुद इशान ने तैयार किया, जो सिर्फ 70 हजार रुपए में बनकर तैयार हो सकता है। फिलहाल इशान के पास ऐसी तकनीकी है जिसमें सामने टिड्डी होने पर उसकी फोटो खीचकर एक एप के जरिए पहचान हो सकती है।

फोटो डालते ही वो एप बता देगा कि ये कौन सी टिड्डी है और किस उम्र की है। झुंड में है या अकेली है। ये एप भी इशान ने खुद ही तैयार किया है। मगर अब वो ऐसी तकनीकी पर काम कर रहे जिससे एक महीने पहले ही ये पता लग जाएगा कि देश में कौन से हिस्से में टिड्डी दल का हमला हो सकता है। इससे प्रशासन और किसानों को बचाव की तैयारियों का समय मिल जाएगा।

इशान कहते हैं कि जब वे 9वीं कक्षा में थे तब से ही इसमें रुचि है। आने वाले वक्त में वे टिड्डी पर ऐसा काम करना चाहते है, जिससे भारत को किसी भी स्तर पर विदेशी टेक्नोलॉजी पर निर्भर ना रहना पड़े। उन्होंने कहा कि पश्चिमी राजस्थान और गुजरात के कच्छ इलाके टिड्डी को लेकर सेंसटिव इलाके हैं। टिड्डी ऑफिस के अधिकारी नवीन भार्गव समेत तमाम अधिकारी भी इशान से मिले।